कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा

उस दिन श्रावण का पूर्ण चन्द्र;
पर रह रह उठता मेघ मन्द्र;
सन्ध्या; नैसर्गिक मनस्तन्द्र;
जाह्नवी कूल!
श्रीनारायण का स्वर सुन्दर;
रेडियो सुन रहा मैं तत्पर;
सह स्वामी सम्मुख शुक्लाम्बर —
ज्यों खिले ~~बबूल के~~ फूल!
पहले से किया हुआ स्वीकृत
जो हुआ अकल्पना से अनुसृत
कि पढूँगी रचनाएँ जो ख्यात
हैं भारत में;
मङ्गलप्रसाद कवि कन्वीनर
मुझको ले आयेंगे निज कार;
निश्चिन्ताचित ~~[illegible]~~ मैं ज्यों भास्वर
स्वर के रस में।
सहसा शान्त ज्यों वज्रपात
संवाद सुना ~~[illegible]~~ ज्यों अभिघात
कि गये स्वर्लोक रवीन्द्रनाथ

द्विप्रहर समय;